ISBN:978-81-974990-9-8

8.कोविड–19 का शिक्षकों पर प्रभाव एवं नवाचार

माधुरी वर्मा

सहायक प्राध्यापिक,
परम आदर्श स्वामी विवेकानंद कॉलेज बलौदाबाजार, रायुपर छ.ग.

परिचय –

कोविड–19 महामारी के फलस्वरूप जो गंभीर परिर्वतन आया उसका स्पष्ट प्रभाव हमारी शिक्षा प्रणाली और विद्यार्थियों पर देखा जा सकता है हमारे देश में लॉकडाउन की स्थिति की शुरूवात कोविड–19 परिस्थिति में एक नए किस्म के कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण हुई। जो चीन के वुहान शहर में 2019के दिसंबर माह के मध्य में लोगो के खतरनाक संक्रमण का कारण बनकर पूरे विश्व में फैल गया। बहुत से लोगो को बिना कारण निमोनिया होने लगा और यह देखा गया कि पीड़ित व्यक्तियों में से अधिकतर वुहान के सी फूड मार्केट में मछलियां तथा पशुओं का व्यापार करने वाले थे। चीनी वैज्ञानिको ने इस वायरस के नये किस्म के पहचान की जिसे प्रारंभ में (2019-nCOV) नाम दिया गया।

इस नये वायरस में कम से कम 70 प्रतिशत वही जीनोम पाये गये जो सार्स–कोरोना वायरस में पाये जाते है। बाद में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना वायरस महामारी को नया नाम कोविड–19 दिया।

कोरोना वायरस ने अनेक लोगो के जीवन को प्रभावित किया तथा दुनिया भर में लाखों लोगो की मौत हो गई। यह एक ऐसी महामारी थी जो एक दूसरे के संपर्क मात्र से फैल रही थी और जानलेवा भी थी। जब किसी देश या क्षेत्र विशेष में कोई आपदा या महामारी आती है तब सरकार द्वारा पूरे देश या क्षेत्र विशेष में इसे लागू किया जाता है और ऐसी आपातकालीन व्यवस्था को लॉकडाउन कहा गया।

जब लॉकडाउन पूरे देश पर लगाया गया तो इसका उद्देश्य जनता की सुरक्षा के लिए जिनमें लोग बिना किसी भी आवश्यक कार्य के घर से बाहर नही निकल सकते थे।

लॉकडाउन ने सभी लोगो को प्रभावित किया परन्तु सबसे ज्यादा प्रभावित विद्यार्थियों की शिक्षा पर पड़ा प्रशासन के द्वारा समस्त शिक्षण संस्थानों विद्यालय विश्वविद्यालयों को बंद कर दिया गया जिसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियो की शिक्षा पर पड़ा जिसके फलस्वरूप शिक्षा की हानी होने लगी जिसके परिणाम स्वरूप ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था की गई जिसे इन्टरनेट के द्वारा जोड़ा गया।

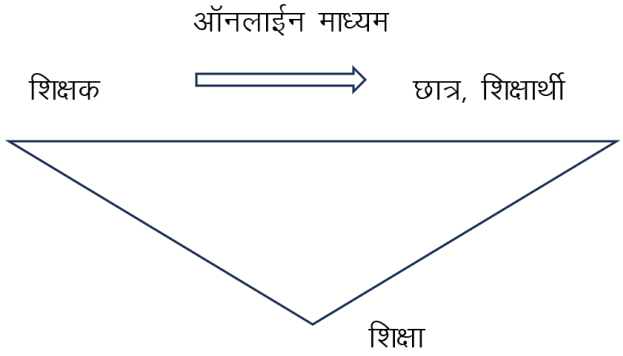

कोविड–19 का शिक्षकों पर प्रभाव –

कोविड–19 का शिक्षकों पर अत्यधिक पड़ा ऑनलाईन शिक्षण 21वीं सदी का हिस्सा बन गया ई लर्निंग को ऑनलाईन प्लेटफार्म पौद्योगिकियों और इंटरनेट के उपयोग के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। ताकि शिक्षण अधिगम को बढ़ावा दिया जा सके और शिक्षार्थियो का ऑनलाईन सेवाओं तक पहुॅच प्रदान की जा सके।ऑनलाईन शिक्षण शिक्षक केंद्रित शिक्षा से छात्र केंद्रित शिक्षा में बदल दिया गया। शिक्षक केंद्रित शिक्षा में शिक्षक शिक्षा के स्त्रोत के रूप में अपनी भूमिका निभाता है और छात्र उनके ज्ञान को प्राप्त करते है। इसके विपरीत छात्र केंद्रित शिक्षा में शिक्षक कक्षा में छात्रों के ज्ञान के प्राप्ति की भूमिका पर जोर देते है। छात्र केंद्रित शिक्षा मे शिक्षक कक्षा में छात्रों के ज्ञान प्राप्ति पर जोर देते है। विकास एक ''भावनात्मक अभ्यास'' के रूप में शिक्षण की प्रकृति जिसमें छात्रों और शिक्षकों की भलाई पारस्परिक रूप से परस्पर जुड़ी हुई है और वे तरीके जिसमें बाहरी परिवर्तन शिक्षक की पेशेवर पूंजी विशेष रूप से उनकी सामाजिक पूंजी को समृद्ध या कमब करते है।

एक ओर महामारी के बाद की शैक्षिक बर्बादी की कहानियॉ और दूसरी ओर उज्जवल बिन्दूओ और आशा की किरणों के उल्लासपूर्ण उत्सवों के अलावा शिक्षण का भविष्य वास्तव में जटिल अनिश्चित और नीतिगत निर्णयों और व्यवसायिक दिशाओं पर निर्भर होगा।

शिक्षक संबंधी समस्याएं –

(1) शिक्षकों एवं छात्रों के द्वारा किये गये प्रयासों की कमी।
(2) शिक्षक प्रशिक्षणों की कमी।
(3) शिक्षण संबंधी गोपनीयता की कमी।
(4) शिक्षार्थी में विषय के प्रति उदासीनता।
(5) ऑनलाईन शिक्षण के समय विषय वस्तु पर शिक्षकों की पकड़ की कमी।
(6) शिक्षक एवं छात्रों के मध्य अन्तः क्रिया की कमी एवं सक्रीय भागीदारी की कमी।

(7) शिक्षार्थी को पाठ्य सामग्री की कमी।
(8) शिक्षण संस्थाओ में हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर की कमी।
(9) छात्रों एवं शिक्षकों में इंटरनेट कौशल के बारे में जागरूकता की कमी।
(10) अन्तरक्रियाशीलता के संदर्भ में पाठ्यक्रम सामग्री की कमी।
(11) दूरस्थ क्षेत्रों में नेटवर्क का ना होना।
(12) शिक्षकों द्वारा छात्रों का उपलब्धि का ज्ञान न हो पाना।
(13) शिक्षण संबंधी मूल्यांकन की समस्याएं।

ऑनलाईन शिक्षण और कठिनाईयॉ –

ऑनलाईन शिक्षण के दौरान होने वाली कठिनाइयों और कक्षा कक्ष में होने वाली समस्याओं में बहुत अंतर है। शिक्षको के सामने लॉकडाउन में होने वाली शिक्षण अधिगम संबंधित कठिनाइयों से जब प्रश्न किये गये तो सभी शिक्षकों के जवाबों से ऑनलाईन कक्षाएं संचालित करते समय विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का पता चलता है। शिक्षण संस्थानों में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय या विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के लिए प्राथमिक चिंता माता–पिता या संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में अधिक आशंकित है नौकरी की सुरक्षा से संबंधित कारण जहॉ गैर सरकारी शिक्षकों में नौकरी से निकाल देने या जांच के दायरे में रहने की समस्यांए ऑनलाईन कक्षाओं ने माता–पिता और स्कूल प्रबंधन शिक्षकों के कार्य करने शिक्षण अधिगम कराने संबंधी उचित लाभ दिया। शिक्षकों ने बताया कि कैसे परिवार के सदस्य कभी भी ऑनलाईन कक्षा में लॉग इन करते है ताकि यह देख सके कि शिक्षक छात्र के कैमरे पर देख सकते है कि कैसे परिवार के सदस्य घर में कैसा माहौल रखते है। शिक्षको अभिभावकों और प्रबंधन के बीच नये संबंधो सं अधिक महत्वपूर्ण है ऑनलाईन शिक्षण में पढ़ाने या सिखाने के लिए नये तरीको या नवाचारों की आवश्यकता थी परन्तु शिक्षकों को प्रशिक्षित नही किया गया था। जबकि अधिकांश शिक्षकों का मानना था कि उन्हे तकनीकी शिक्षा का ज्ञान पहले से था अधिकांश शिक्षक पावरपांइट प्रस्नुतियों में स्थानांतरित करते है या अपनी पसंद के ऑनलाईन प्लेटफार्म के माध्यम से व्याख्यान देते है। निजी संस्थानो के शिक्षक सरकारी स्कूल के शिक्षकों की तुलना में अधिक बार ऑनलाईन कक्षाएं ले रहे थे अन्य शिक्षक कई माध्यमों से असाइमेंट भेज रहे थे।

शिक्षको व छात्रों को फोन और लैपटॉप पर व्यस्त रखना कितना चुनौतीपूर्ण था शिक्षकों को कितना अतिरिक्त काम करना पड़ता था नवीन प्रकार के शिक्षण सामग्री बनाने के लिए कई घंटे लगते है नियमित कक्षाओं में इसकी आवश्यकता नही होती थी शिक्षकों के लिए माइक्रोफोन कैमरे जैसे तकनीकी उपकरणों के उपयोग को रोकना एक कठिन काम था सबसे बड़ी समस्या ऑनलाईन कक्षाओं के दौरान शिक्षार्थी कक्षा में है या नही कौन ध्यान दे रहा है या नही कई शिक्षकों ने शिक्षार्थी के बदमाशी और उनके अनादर के कारण ई कक्षाएं छोड़ दी।

शिक्षक सोशल मीडिया और ब्लॉग पोस्ट के माध्यम से अपनी चिंता और भावनाओं को व्यक्त कर रहे थे बिना ऑख संपर्क और आमने सामने बातचीत के शिक्षण सबसे अच्छे शिक्षको के लिए भी चुनौतीपूर्ण हो गया।

कोविड–19 का शिक्षको पे सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव –

कोविड–19 में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक इस्तेमाल किये जाने वाले शब्दों में डिजीटल लर्निंग है शिक्षा में डिजिटल लर्निंग ऑनलाईन शिक्षण उपकरणों का बढ़ता उपयोग है। जिसमें अधिगम प्रक्रिया में सीखने के नये तरीके को जन्म दिया है शैक्षणिक संस्थान छात्रों को शिक्षित करने कर प्रक्रिया को जारी रखने के लिए ऑनलाईन शिक्षण प्लेटफार्म की ओर बढ़ने लगे। ऑनलाईन सीखने में डिजीटल लर्निंग नई परिर्वतन की अवधारणा बन चुकी है। शिक्षार्थी और शिक्षण संस्थानो में दुनिया भर में डिजिटल लर्निंग एक आवश्यक संसाधन के रूप में उभर कर आयी। कई संस्थाओ में यह शिक्षा का बिल्कुल नया तरीका था। ऑनलाईन शिक्षण केवल शिक्षाविदों के लिए बल्कि यह छात्रों की पाठ्येत्तर गतिविधियों को सीखने के लिए भी लागू हो गया। कोविड–19 परिस्थिति में ऑनलाईन सीखने की मांग में काफी वृद्धि हुई जो भविष्य में जारी रखने की प्रक्रिया के रूप में आज भी हमारे साथ है।

शिक्षण विधियों की तरह ऑनलाईन सीखने के भी सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का अपना एक सेट है शैक्षणिक संस्थानों को पाठ्यक्रम संबंधी रणनीति बनाने और उसे अधिक कुशलता से वितरित करने में मदद मिल सकती है जिसमें छात्रों के लिए एवं निर्बाध सीखने की यात्रा सुनिश्चित हो सके।

शिक्षकों पर ऑनलाईन अध्ययन का सकारात्मक प्रभाव –

- शिक्षण विधियों का नवाचार।
- दुरस्थ शिक्षा और ऑनलाईन पद्धिति।
- प्रभावशीलता और दक्षता।
- वित्तीय एवं कम लागत।
- समय और स्थान की पहुॅच।
- शिक्षार्थी की अधिक उपस्थिति।
- अधिवास में मनोरंजन का उपयोग।

शिक्षण विधियों का नवाचार –

अलग–अलग छात्रों में सीखने की शैली अलग होती है। कुछ छात्र दृश्य सामग्रियों से सीखना पसंद है जबकि कुछ छात्र विडियो या ऑडियो के समूह में सीखते है और कुछ छात्र एकल विद्यार्थी होते है जो बड़े समूहों से विचलित हो जाते है। अपने विकल्पों और संसाधनों की रेंज के साथ ऑनलाईन पद्धिति को कई तरीको से वैयक्तिकृत किया जा सकता है। यह प्रत्येक छात्र की आवश्यकता के अनुकूल सीखने का एक आदर्श वातावरण बनाने का सबसे अच्छा तरीका है।

दूरस्थ शिक्षा और ऑनलाईन पद्धिति –दुरस्थ शिक्षा डिजिटल पहुॅच के साथ या उसके बिना हो सकती है डिजिटल रूप से आधारित बहुत सी शिक्षा व्यक्तिगत शिक्षकों से सलाह और समर्थन मिलता है कि ज्ञान सूचना और सीखने के कार्यो तक कैसे पहुॅचे और कैसे संसाधित करे दुरस्थ वातावरण में डिजिटल शिक्षा शिक्षकों के सामने यह चुनौती भी पेश करती है वे छात्रों के साथ संबंध बनाये रखे और भावनात्मक जुड़ाव स्थापित करे।

प्रभावशीलता एवं दक्षता –ऑनलाईन पद्धिति शिक्षकों द्वारा छात्रों को सीखाने का एक प्रभावशाली तरीका है जिसमें वीडियो, पीडीएफ, पॉडकास्ट जैसे कई तरीको के द्वारा शिक्षक अपनी पाठ–योजनाओं का निर्माण करते है और पारंपरिक संसाधनों (पाठ्य–पुस्तकों) से परे एक नयी पद्धिति द्वारा पाठ योजना का विस्तार करके अधिक कुशल शिक्षक बनने में सक्षम होते है।

वित्तीय एवं कम लागत –

ऑनलाईन शिक्षा पारंपरिक शिक्षा की तुलना में कही अधिक किफायती है ऑनलाईन पद्धिति का एक अन्य लाभ कम वित्तीय लागत है क्योकि ऑनलाईन सीखने से छात्र परिवहन भोजन और सबसे महत्वपूर्ण अचल संपत्ति के लागत बिन्दू समाप्त हो जाते है इसके अतिरिक्त सभी पाठ्यक्रम या अध्ययन सामग्री ऑनलाईन उपलब्ध होती है जिसमें एक कागज रहित सीखने का वातावरण तैयार होता है जो पर्यावरण के लिए फायदेमंद होने के साथ–साथ अधिक किफायती भी रहती है।

समय और स्थान की पहुॅच –

ऑनलाईन पद्धिति शिक्षा में छात्रों को समय और स्थान की पहुच प्रदान करती है जिसमें छात्र अपनी पसंद के किसी भी स्थान में रहते हुए कक्षाओं में भाग लेते है और विद्यार्थी भौगोलिक सीमाओं से प्रतिबंधित होने के बजाय व्यापक नेटवर्क तक पहुॅचने की अनुमति प्रदान करती है इसके अतिरिक्त ऑनलाईन पद्धिति व्याख्यानों को रिकार्ड संग्रहीत और भविष्य के संदर्भ में साझा करने और छात्रों को उनके आराम के समय में सीखने की सामग्री तक पहुॅचने में मदद करती है।

शिक्षार्थियों की अधिक उपस्थिति –

ऑनलाईन पद्धिति कक्षाओं में शामिल होने का बेहतर विकल्प होता है जो छात्रों को घर या बाहर कही भी अपनी पसंद के स्थान पर रहकर कक्षा में उपस्थित होने की अनुमति प्रदान करता है जिससे छात्रों के पाठ छूटने की संभावना कम हो जाती है और छात्र उपस्थिति बेहतर होती है।

शिक्षण अधिगम को मनोरंजन बनाना –

ऑनलाईन शिक्षण गतिविधियां छात्रों को वास्तविक दुनिया में कदम रखने पर पहचान प्रदान की जाती है। शिक्षक छात्रों के कलए दैनिक अध्ययन को अधिक रोमांचक और आकर्षक बनाने के लिए शिल्प का भी उपयोग करते है कहानियों तथा विषय केन्द्रित अनुभवों और विचारो का प्रयोग कर बच्चो को विषय के केन्द्र की ओर उन्मुख करना जिससे शिक्षार्थी में ज्ञान के प्रति रूचियॉ जाग्रित कर सके।

शिक्षकों पर ऑनलाईन अध्ययन का नकारात्मक प्रभाव –

- प्रशिक्षणों की कमी।
- नेटवर्क (इंटरनेट) कनेक्टविटी।
- शिक्षार्थीयों के ध्यान केन्द्रित करने में संघर्ष।
- इलेक्ट्रानिक डिवाइस की अनुपलब्धता।
- स्क्रीन टाइमिंग का प्रभाव।
- अलगाव की भावना।
- पौद्योगिकी की समझ।

प्रशिक्षणों की कमी –कोविड–19 के समय अन्तराल में प्रक्रिया पहले शिक्षकों को प्रशिक्षणों से वंचित रखा जिससे शिक्षकों को बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ा 200 मीटिंग से लेकर बच्चों की उपस्थिति तथा समस्याओं का उनके कार्यभार पर बहुत बड़ा असर पड़ा जिससे कक्षा संचालित से लेकर कक्षागत समस्याओं में उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ा।

नेटवर्क (इंटरनेट) कनेक्टविटी –ऑनलाईन अध्ययन की एक प्रमुख चुनौती इंटरनेट कनेक्टविटी है जो आज भी छोटे शहरों और कस्बों में इंटरनेट की अच्छी गति के साथ लगातार कनेक्ट रहना एक समस्या है। छात्रों या शिक्षकों के लिए लगातार इंटरनेट कनेक्शन की असुविधा सीखने और सिखाने की प्रक्रिया से बाधक बनकर अध्ययन की निरंतरता में कमी लाती है और शिक्षण प्रक्रिया को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

शिक्षार्थी को ध्यान केन्द्रित करने में संघर्ष –शिक्षार्थी के लिए ऑनलाईन पद्धिति की सबसे बड़ी चुनौती लंबे समय तक स्क्रीन पर ध्यान केन्द्रित करने का संघर्ष है जो छात्रों को ऑनलाईन अध्ययन के दौरान अन्य सोशल मीडिया की साइटों से विचलित होने की संभावनाएं प्रदान करता है और अध्ययन के प्रति अरूचि तथा मानसिक संघर्ष का कारण बनता है।

इलेक्ट्रानिक डिवाइस की अनुपलब्धता –ऑनलाईन कक्षाओं को संचालित करने के लिए शिक्षक व छात्र के पास आवश्यक संसाधनों और उपकरणों का होना अति आवश्यक है। इलेक्ट्रानिक डिवाइस की अनुपलब्धता ऑनलाईन अध्ययन की सबसे मुख्य एवं बड़ी बाधक है।

स्क्रीन टाइमिंग का प्रभाव –

अधिक समय तक स्क्रीन के सामने बैठने के कारण कई माता–पिता अपने बच्चे के स्वास्थ्य खतरों के बारे में सोचकर चिंतित होते है और कभी–कभी स्क्रीन के सामने झुके रहने के कारण छात्रों को खराब मुद्रा और अन्य शारीरिक समस्याएं भी हो जाती है।

अलगाव की भावना –छात्र पारंपरिक कक्षाओं में अपने साथियों की संगति में रहकर बहुत कुछ सीखते है पर ऑनलाइन कक्षाओं में छात्रों और शिक्षकों के मध्य कम से कम शारीरिक संचार होता है जो छात्रों में अक्सर अलगाव की भावना का विकास करता है।

प्रौद्योगिकी की समझ–

ऑनलाईन शिक्षण के लिए शिक्षकों में डिजिटल रूपों का उपयोग करने की बुनियादी समझ का होना अति आवश्यक है जिससे शिक्षक ऑनलाईन कक्षाओं को निर्बाध रूप से संचालित कर सके।

कोविड–19 का शिक्षा एवं शिक्षकों में नवाचार का प्रभाव –

ऑनलाईन शिक्षण छात्रों को अधिक स्वतंत्र शिक्षार्थी बनाती है जिसमें वे कक्षाओं में अधिक स्वायत्ता और बौद्धिक स्वतंत्रता महसूस करते है परन्तु यही स्वतंत्रता उनके मन को भी प्रभावित करती है। जिस कारण वे अपने सीखने को निजीकृत करते हुए कभी–कभी अपने लक्ष्यों से भटक जाते है कोविड–19 वायरस के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए भारत सरकार द्वारा लगाए गए कई लॉकडाउन के कारण शैक्षणीक केन्द्र बंद हो गए और हर कोई ई लर्निंग प्लेटफॉर्म की ओर मोड़ गया लेकिन जब शिक्षण संस्थानों ने जूम और गूगल कॉल की ओर रूख किया तो एक बड़ा अंतर था और कई धारणाएं बनी।

हर किसी बच्चे के पास डिजिटल प्लेटफॉर्म तक पहुँचने के लिए कम से कम एक इलेक्ट्रानिक डिवाइस है। विश्व आर्थिक मंच का कहना है कि महामारी के कारण लॉकडाउन से करीब 350 मिलियन छात्र प्रभावित हुए उनमें से सभी विभिन्न तकनीकी समस्याओं के कारण ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म तक नही पहुँच पाए।

कोविड–19 महामारी के बाद की शैक्षिक प्रणाली यह अपेक्षा और मान लेगी की डिजिटल दक्षता सभी शिक्षकों के शैक्षणिक प्रदर्शन का एक अभिन्न अंग है। डिजिटल लर्निंग और डिजिटल दक्षता में ऐप्स और टैब्स में महारत हासिल करने से कही ज्यादा शामिल है।

वे ड्रॉप–डाउन मेनू चैट बॉक्स ब्रेकआउट पूर्ण किये गये असाइनमेंट पोस्ट करने के तरीके आदि जैसे डिजिटल टूल का उपयोग करना व डिजिटल क्लासरूम में माइकल सन (2021) में उल्लेख किया कि जब छात्रों को सचमुच उनके अपने उपकरणों पर छोड़ दिया जाता है तो वे बहुत कुछ सीखने का प्रयास करते है।

महामारी से पहले शिक्षण पेशा शायद ही डिजिटल डायनासोर का समूह था शिक्षक संगठनों और अंतरराष्ट्रीय नीति संगठनों ने बताया कि जब घर पर ही स्कूली शिक्षा की ओर बदलाव हुआ तो शिक्षकों ने तेजी से अपने डिजिटल कौशल विकसित किये तकनीकी ने अधिक सुचारू रूप से काम किया शिक्षक कैमरें के सामने अधिक सहज हो गये शिक्षकों ने ऑनलाईन दूरस्थ शिक्षण की कुछ अधिक कठिन चुनौतियों में भी महारत हासिल करना शुरू कर दिया जैसे भावनाओं को प्रबंधित करना और संबंध बनाना। शिक्षण में नवाचार से पौद्योगिकी कंपनियॉ और ज्यादातर संस्थाएँ ऑनलाईन शिक्षा हाइब्रिड शिक्षा और अन्य डिजिटल विकल्पों में वृद्धि हुई। जो सीखने के साथ जुड़ाव उपलब्धि का मार्ग बना।

निष्कर्ष –

कोविड–19 महामारी संकट ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है और दुनिया के लगभग सभी क्षेत्रों में इसका दूरगामी प्रभाव पड़ा है। ऐसे ही एक नाटकीय रूप से बदलता हुआ क्षेत्र शिक्षा है। दुनिया भर की कई सरकारों ने संकट की लहर को रोकने के प्रयास में शैक्षणिक संस्थानों को अस्थाई रूप से बंद कर दिया है। अभी तक स्कूल कॉलेज और विश्वविद्यालयों के खुलने की कोई संभावना नही दिख रही है इसने छात्रों के भविष्य के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया है। बल्कि यह शिक्षकों कॉलेजो और विश्वविद्यालयों के भविष्य को खतरे में डालता है कोविड–19 स्थिति के तहत शिक्षा प्रदान करने के लिए ऑनलाईन शिक्षण एक अच्छा विकल्प था।

वर्चुअल स्कूली शिक्षा ऑनलाईन और ऑफलाईन कार्यो का संतुलन प्रदान करते हुए कक्षा की चारदिवारी से परे सीखने में मदद करती है। साथ ही छात्रों की पसंद और लचीलापन को उनकी गति से सीखने की अनुमति भी देती है जहॉ एक ओर वर्चुअल स्कूल ने हमारे शिक्षण और सीखने के तरीको पर पुर्नविचार करने की संभावनाओं को खोल दिया है। ऑनलाईन पद्धिति ने कई क्षेत्रों में बदलाव और मजबूत प्रतिमान बदलने के समय की शुरूआत की है इसमें हमें पारंपरिक स्कूल मॉडल पर पुर्नविचार करने और हमारे सीखने के तरीकों पर सवाल उठाने के लिए मजबूर कर दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. वर्मा कविता –कोविड–19 महामारी परिस्थिति में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का उनकी चिन्तन शैली एवं शैक्षिक तनाव पर प्रभाव।
2. शंकर गणेश –कोविड–19 महामारी के दौरान जनसंचार माध्यमों मे डाटा जर्नलिज्म की उपयोगिता और प्रभावों का अध्ययन। 22-09-2023.
3. आर. मीना – कोविड–19 ट्वीट्स पर सामाजिक भावना विश्लेषण शिक्षण में कुशल अनुकूलन एल्गोरिट्स का उपयोग। 22-10-2023.
4. पी रेणुका देवी – कोविड–19 पूर्वानुमान के लिए कुशल फीचर चयन और एन्सेम्बल लर्निंग दृष्टिकोण का डिजाइन। 22-10-2023.
5. शर्मा अनुराधा – कोविड–19 के दौरान सीनियर सेकेंडरी छात्रों के लिए ऑनलाईन सीखने का संतोष और प्रेरणा स्तर पर प्रभाव हरियाणा के छात्रों का अध्ययन। 02-01-2024.
6. https://hi.wikipedia.org
7. https://www.mayoclinic.org
8. https://www.economicsobservatory.com
9. https://www.avalara.com
10. https://www.undp.com
11. https://www.nabard.org